

संयुक्त व एकल परिवारों में मनोसामाजिक कल्याण की भूमिका

KM. Pratima*, Dr. Suman Audichya**

Research Scholar Human Development and Family Studies, M.P.U.A.T., Udaipur, 313001,
(Rajasthan), India

Professor and Head, Human Development and Family Studies, M.P.U.A.T., Udaipur, 313001
(Rajasthan), India

Corresponding author- KM. Pratima, Research Scholar Human Development and Family
Studies, M.P.U.A.T., Udaipur, 313001, (Rajasthan), India

Email: pandeypratima344@gmail.com

परिवार व्यक्ति के जीवन की आधारशिला होता है, जो उसे मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित और सशक्त बनाता है। परिवार का प्रकार—चाहे वह संयुक्त हो या एकल,—व्यक्ति के मनोसामाजिक कल्याण (Psychosocial Well-being) को गहराई से प्रभावित करता है। यह लेख संयुक्त और एकल परिवारों में मनोसामाजिक कल्याण की भूमिका को स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास है।

मनोसामाजिक कल्याण क्या है?

मनोसामाजिक कल्याण का तात्पर्य है एक व्यक्ति की मानसिक स्थिरता, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक अनुकूलन की स्थिति। इसमें व्यक्ति का आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास, सकारात्मक सोच और रिश्तों में सामंजस्य जैसे पहलू शामिल होते हैं। परिवार इस कल्याण को बनाए रखने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संयुक्त परिवारों में मनोसामाजिक कल्याण की भूमिका

संयुक्त परिवारों में तीन या अधिक पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं, जिससे परस्पर सहयोग, सामूहिक जिम्मेदारी और भावनात्मक जुड़ाव अधिक होता है।

मुख्य विशेषताएँ:



- **भावनात्मक सुरक्षा:** कई सदस्य होने से भावनात्मक सहारा मिलता है, जिससे तनाव और अकेलापन कम होता है।
- **सामाजिक सीख और संस्कार:** बच्चों को बड़ों से सीखने का अवसर मिलता है जिससे उनका सामाजिक विकास बेहतर होता है।
- **संकट प्रबंधन में सहयोग:** कठिन समय में परिवार का सामूहिक समर्थन मानसिक स्थिरता बनाए रखता है।
- **बुजुर्गों की गरिमा:** बुजुर्गों को मान-सम्मान और उपयोगिता का अनुभव होता है, जिससे उनका आत्म-सम्मान बना रहता है।

संभावित चुनौतियाँ:

- विचारों का टकराव और निजता की कमी कभी-कभी मानसिक असंतुलन का कारण बन सकती है।
- युवाओं को स्वतंत्र निर्णय लेने में कठिनाई महसूस हो सकती है।

एकल परिवारों में मनोसामाजिक कल्याण की भूमिका

एकल परिवारों में सामान्यतः माता-पिता और बच्चे होते हैं। यह संरचना स्वतंत्रता और आधुनिक जीवनशैली के अनुकूल होती है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता:** निर्णय लेने और अपनी जीवनशैली अपनाने की आज़ादी अधिक होती है, जो आत्म-विश्वास बढ़ाता है।
- **सीमित तनाव:** कम सदस्य होने से संघर्ष और दबाव की संभावना कम होती है।
- **निजता:** प्रत्येक सदस्य को अपनी भावनाओं और समय का प्रबंधन करने का अवसर मिलता है।

संभावित चुनौतियाँ:

- भावनात्मक अकेलापन, विशेषकर बुजुर्गों और गृहणियों के लिए।
- बच्चों को सामाजिकता और विविध दृष्टिकोणों से सीखने के अवसर सीमित हो सकते हैं।
- संकट की स्थिति में सामाजिक और भावनात्मक सहयोग की कमी महसूस हो सकती है।

निष्कर्ष

संयुक्त और एकल परिवारों दोनों में मनोसामाजिक कल्याण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु दोनों व्यवस्थाओं की प्रकृति और प्रभाव भिन्न होते हैं। जहाँ संयुक्त परिवार सामूहिक सहयोग और सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, वहीं एकल परिवार व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को सशक्त करता है।

इसलिए, मनोसामाजिक कल्याण केवल पारिवारिक संरचना पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उस परिवार के संचार, समझ, सहानुभूति, और संबंधों की गुणवत्ता पर आधारित होता है। यदि परिवार में भावनात्मक जुड़ाव, परस्पर सम्मान और



सहयोग हो, तो चाहे वह किसी भी प्रकार का हो—मनोसामाजिक रूप से सशक्त बन सकता है।
एक अच्छा परिवार वही है, जहाँ मन, समाज और संबंध